अध्याय 3

हाइड्रोकार्बन रिजर्व अभिवृद्धि की ओर ओआईएल के प्रयास

ओआईएल हाइड्रोकार्बन रिजर्व अभिवृद्धि[11] के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में कितनी प्रभावी है, इसका निर्धारण करने के लिए लेखापरीक्षा ने रिजर्व प्राक्कलन प्रक्रिया, रिजर्व अभिवृद्धि की कुशलता, एकसमान ऑनशोर अपस्ट्रीम तेल कम्पनियों के बीच हाइड्रोकार्बन खाजों में ओआईएल की सफलता, आरआरआर के माध्यम से प्रतिस्थापन उत्पादन में खोजो तथा उनकी दक्षता के मुद्रीकरण की समीक्षा की।

3.1 रिजर्व प्राक्कलन तथा अभिवृद्धि

ओआईएल ने मै. डेगोलर एवं मेकनागटन, एक सलाहकार के माध्यम से वर्ष 1956 में पहली बार अपना वार्षिक रिजर्व प्राक्कलन किया। रिजर्व प्राक्कलन का कार्य 1966 से ओआईएल के घरेलू दल द्वारा किया गया। रिजर्व प्राक्कलन विभिन्न अन्वेषण तथा विकास गतिविधियों अर्थात ड्रिलिंग, वर्क-ओवर जांच परिणामों, भूविज्ञानी तथा इंजीनियरिंग समीक्षाएं तथा संग्रहो के दाब उत्पादन संव्यवहार आदि से एकत्रित साक्ष्य को सम्मिलित करके किया जाता है।

2009-10 से 2013-14 तक की अवधि के लिए ओआईएल की भिन्न प्राक्कलन पद्धतियों अर्थात 1पी[12], 2पी[13] तथा 3पी[14] श्रेणियों के तहत तेल तथा गैस रिजर्वो के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को तालिका 3.1 तथा चित्र 3.1 और 3.2 में दिया गया है:

[11] वसूलीयोग्य हाइड्रोकार्बन रिजर्वो में वृद्धि।

[12] प्रमाणित रिजर्वों के समान।

[13] प्रमाणित जमा संभावित रिजर्वों के जोड़ के समान।

[14] प्रमाणित जमा संभावित जमा संभव रिजर्वों के जोड़ के समान।

तालिका 3.1 – ओआईएल के तेल तथा गैस रिजर्व

प्राक्कलन पद्धति की श्रेणी	रिजर्व का प्रकार	वर्ष				
		2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
1पी	तेल रिजर्व (एमएमएसटीएल)	44.8	44.5	43.6	41.4	38.9
2पी		92.1	92.8	95.4	95.1	97.3
3पी		145.4	137.9	139.7	135.1	138
1पी	गैस रिजर्व (बीसीएम)	36	33.9	30	27.3	24.6
2पी		56.2	53.7	50.7	47.3	45.18
3पी		76.5	74	71.1	67.7	66.36

स्रोत:रिजर्व मूल्यांकन टिप्पणी

चित्र 3.1 – तेल रिजर्व

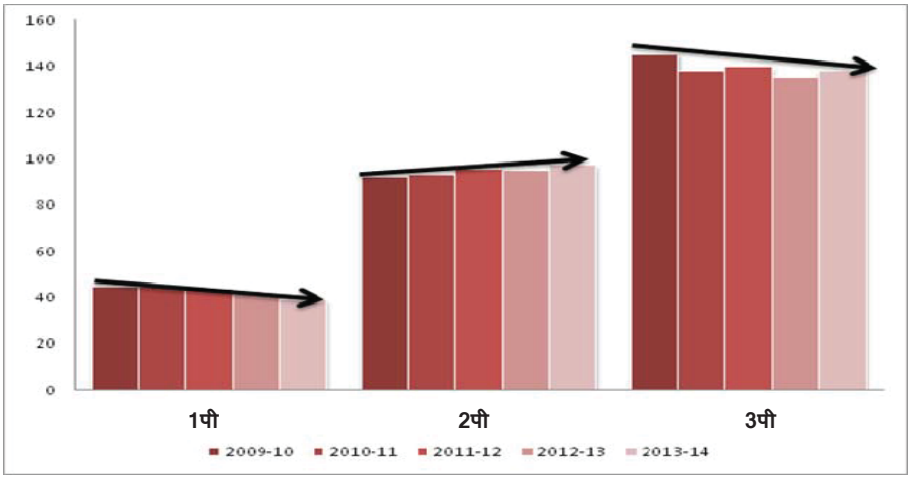

चित्र 3.2 – गैस रिजर्व

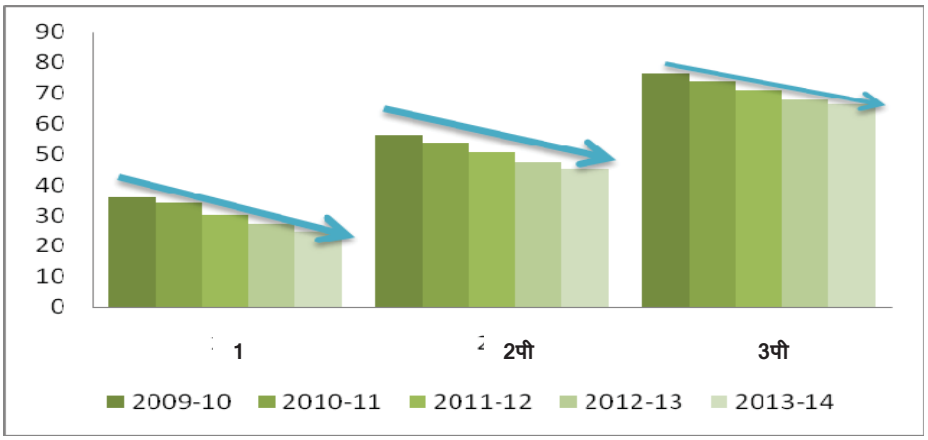

लेखापरीक्षा ने अवलोकन किया कि :

- जब 2पी श्रेणी के तहत तेल रिजर्व बढ़ता है तो यह 1पी (अर्थात प्रमाणित) श्रेणी के तहत कम होता है अत: रिजर्वों की निवल वृद्धि केवल संभावित श्रेणी के तहत थी। 2पी श्रेणी में वृद्धि क्षेत्रीय विकास गतिविधियों पर आधारित भूविज्ञानी तथा इंजीनियरिंग समीक्षाओं के कारण हो सकती है;
- 3पी (अर्थात संभावित) श्रेणी के तहत तेल रिजर्व में कमी अन्वेषण गतिविधियों के माध्यम से नए क्षेत्रों का समावेश न होना दर्शाती है;
- सभी श्रेणियों के तहत गैस रिजर्व 2009-10 से 2013-14 के दौरान कम हुआ। ओआईएल ने वर्ष 2013-14 की अपनी रिजर्व मूल्यांकन टिप्पणी में कहा कि 2008-09 के बाद से गैस रिजर्व में कमी की प्रवृत्ति देखी गई जैसाकि हाल ही के वर्षों में कोई मुख्य एमओयू/गैस बिक्री ठेका नहीं किया गया।
- यद्यपि ओआईएल अपने डिगबोई तथा कुमचाय क्षेत्रों से गैस उत्पादन क्रमश: 1889 तथा 1987 से कर रहा था तथापि, ऐसी गैस की आपूर्ति के लिए किसी ठेके के अभाव में इसे फैलाना था तथा रिजर्व प्राक्कलन में नहीं समझना था।

चूंकि, ओआईएल ने उन रिजर्वों को प्रमाणित करने में आशा से कम सफलता प्राप्त की जो 1पी श्रेणी में कमी प्रवृति से स्पष्ट रूप में हाइड्रोकार्बन क्षेत्र के आगामी पोषणीय विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि 1पी हाइड्रोकार्बन के प्रमाणित रिजर्वों को दर्शाती है।

लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते हुए ओआईएल ने कहा (अप्रैल 2015) कि 1पी रिजर्व में वृद्धि न होना मौजूदा नीचली श्रेणी रिजर्वों से उत्पादन तथा गैर-अनुपातिक अद्यतन की वजह से रिजर्व की कमी के कारण था। इसी प्रकार, 3पी रिजर्वों में महत्वपूर्ण वृद्धि के अभाव ने संभावित श्रेणी के गैर-अनुपातिक अद्यतन तथा अन्वेषण के माध्यम से नई रिजर्व अभिवृद्धि को दर्शाया। 2पी श्रेणी में वृद्धि जांच के माध्यम से अधिक विश्वास की वजह से संभव श्रेणी के संभावित श्रणी रिजर्व में उन्नयन के कारण थी। इसके अलावा, राजस्थान का गैस बिक्री करार 31 मार्च 2015 तक मान्य था तथा इसके नवीकरण का कार्य प्रक्रियाधीन था। ईपीए डिगबोर्ड से उत्पादित गैस को फैलाने के संदर्भ में इसे मुख्य रूप से बाधजन तथा मकुम में किया जा रहा था जिसमें से मुख्य गैस फ्लैरिंग बाधजन से थी। ओआईएल गैस रिक्तीकरण तथा हापजन में बूस्टर कम्प्रैसर के संस्थापन के लिए बाधजन से दुलियाजन तक एक 16 इंच की गैस पाइपलाइन बिछा रहा था जो प्रगति पर था। कुमचाय क्षेत्र से उत्पादित गैस को अधिकतर ग्राहकों की अनुपलब्धता के लिए फैलाया गया था। ओआईएल कुमचाय गैस का उपयोग करने के लिए 5 से 10 एमडब्ल्यू क्षमता की कुमचाय विद्युत संयंत्र परियोजना की स्थापना के लिए योजना बना रहा था।

तथ्य यह है कि एक प्रमुख एनओसी होने के नाते, ओआईएल को 3पी से 2पी तथा 2पी से 1पी तक उन्नयन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक क्षमता निर्माण करना चाहिए। नवीनतम क्षेत्रों को जोड़ना एक ईएवंपी कम्पनी के निष्पादन की जांच करने के लिए प्रमुख मानदण्ड होना चाहिए। हाइड्रोकार्बन रिजर्वों के नए क्षेत्रो के लिए देश की बढती हुई आवश्यकता के संदर्भ में, यह अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

एक्जिट सम्मेलन (जुलाई 2015) में, एमओपीएनजी/ओआईएल ने कहा कि ऊपरी असम नदी घाटी जो ओआईएल का प्रमुख परिचालन क्षेत्र था, में अन्वेषण परिपक्वता के कारण रिजर्वो की खोजो तथा अभिवृद्धि का विस्तार धीरे-धीरे कम हो रहा था। इन वर्षों के दौरान 1पी रिजर्वों में कमी तेल तथा गैस उत्पादन की मात्रा तथा 2पी रिजर्वो के गैर-अनुपातिक उन्नयन की वजह से कमी के कारण थी। 2पी रिजर्वों में वृद्धि 2पी श्रेणी में वार्षिक रिजर्व अभिवृद्धि के कारण थी। 3पी रिजर्वों में कमी मूल्यांकन तथा विकासक गतिविधियों की वजह से 3पी के घटक के 2पी श्रेणी में उन्नयन परन्तु अन्वेषण प्रयासो द्वारा 3पी श्रेणी में नए रिजर्वों की सीमित अभिवृद्धि के कारण थी।

इस प्रकार, ओआईएल को वहनीय तेल तथा गैस उत्पादन के लिए 3पी श्रेणी में नए रिजर्वों की अभिवृद्धि और 3पी के 2पी तथा 2पी के 1पी श्रेणी में उन्नयन प्रारम्भ करने के लिए अपने प्रयासो पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

3.2 रिजर्व अभिवृद्धि में दक्षता

रिजर्व अभिवृद्धि लक्ष्यों को एक वर्ष के दौरान ड्रिलिंग के लिए योजनित अन्वेषणात्मक कुओं की कुल संख्या तथा पिछले वर्ष की अन्वेषणात्मक ड्रिलिंग सफलता को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाता है। भारत में, ओआईएल की मुख्य अन्वेषण तथा उत्पादन गतिविधियों को असम एवं असम-अरकन (ए एवं एए) तथा राजस्थान (आरजे) में किया जाता है। 2009-10 से 2013-14 तक के पांच वर्षों के दौरान वर्ष-वार लक्ष्यों तथा वास्तविक रिजर्व अभिवृद्धि को तालिका 3.2 तथा आकृति 3.3 में दर्शाया गया है:

तालिका: 3.2 – लक्ष्य तथा वास्तविक रिजर्व आभिवृद्धि

(एमएमटाय में)

	असम एवं असम-अरकन						राजस्थान					
वर्ष	**2009-10**	**2010-11**	**2011-12**	**2012-13**	**2013-14**	**कुल**	**2009-10**	**2010-11**	**2011-12**	**2012-13**	**2013-14**	**कुल**
लक्ष्य (एमओयू)	10	8.4	8.7	8.8	8.8	44.7	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.
लक्ष्य (बीई)	9.5	8	8.4	8	8	41.9	-	0.25	0.25	0.15	0.15	0.8
लक्ष्य(आरई)	-	-	-	8.5	6	14.5	-	0.05	0.05	0.15	0.07	0.32
उपलब्धि[15]	10.06	8.43	8.41	8.2	7.31	42.41	0	0	0	0.464	0.007	0.471
अधिशेष /एमओयू लक्ष्यो मे (कमी)	0.06	0.03	-0.29	-0.6	-1.49	-2.29	-	(0.25)	(0.25)	0.314	(0.143)3	(0.329)

टिप्पणी: ए एवं एए में 2011-12 तक कोई आरई लक्ष्य निर्धारित नहीं था। आरजे में 2009-10 के लिए कोई बीई एवं आरई लक्ष्य निर्धारित नहीं था। चूंकि आरजे के लिए कोई एमओयू लक्ष्य निर्धारित नहीं था अत: कमी को बीई लक्ष्य के आधार पर संगणित किया गया।

चित्र 3.3 – लक्ष्य (एमओयू) की तुलना में ए एवं एए की उपलब्धि

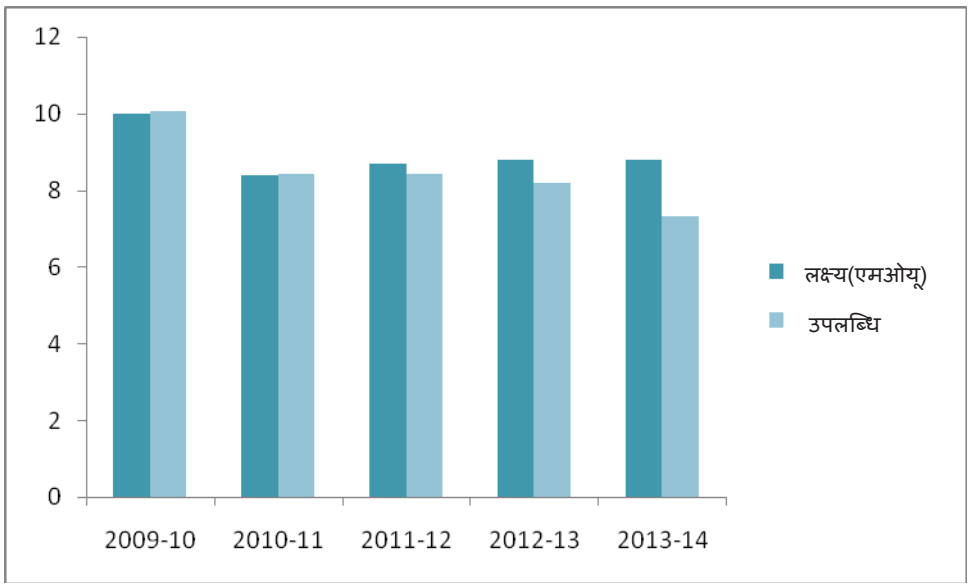

लेखापरीक्षा ने पाया कि:

- असम एवं असम-अरकन में 2009-10 तथा 2010-11 वर्षों के दौरान अधिशेष नीचे आया तथा 2011-12 से 2013-14 तक के तीन लगातार वर्षों के लिए कमी में वृद्धि हुई। इस प्रकार, रिजर्व अभिवृद्धि के संदर्भ में एक समग्र कमी प्रवृति थी।

[15] संयुक्त उद्यम ब्लॉको की रिजर्व अभिवृद्धि को छोड़कर

- एमओपीएनजी द्वारा ओआईएल के साथ विचार विमर्श करके असम तथा असम-अरकन के लिए प्रत्येक वर्ष एमओयू लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है। राजस्थान के लिए कोई एमओयू लक्ष्य निर्धारित नहीं था।
- ओआईएल ने असम एवं असम-अरकन में 2011-12 के बाद से अपने एमओयू में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया तथा बजटीय लक्ष्य और संशोधित लक्ष्य सभी वर्षों के दौरान एमओयू से बहुत कम तक निर्धारित किया।
- यद्यपि ओआईएल ने 2013-14 में आरई लक्ष्य को प्राप्त किया अत: इस पर ध्यान देना प्रासंगिक है कि असम एवं असम-अरकन में, ओआईएल ने बीई लक्ष्य के 75 प्रतिशत तथा एमओयू लक्ष्य के 65 प्रतिशत पर आरई लक्ष्य को निर्धारित किया। ऐसे संशोधन के लिए कारण दर्ज नहीं थे।
- राजस्थान में, 2010-11 से 2013-14 तक की समयावधि के दौरान, 0.80 एमएमटॉय का औसत बीई लक्ष्य किसी दर्ज कारण के बिना आरई लक्ष्य में 60 प्रतिशत तक कम हुआ;
- ओआईएल ने पिछले पांच वर्षों के दौरान राजस्थान में रिजर्व अभिवृद्धि का अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं किया। कुल रिजर्व अभिवृद्धि लक्षित मात्रा का केवल 59 प्रतिशत थ।

ओआईएल ने उत्तर दिया (अप्रैल 2015) कि आरई संशोधित योजना का निर्णय लेने के लिए प्रत्यक्ष गतिविधियों की अर्द्ध-वार्षिक प्रवृति पर आधारित था। केवल बीई लक्ष्य निष्पादन मूल्यांकन तथा सरकारी रिपोर्टिंग के लिए उद्धृत किया जाता है। रिजर्व अभिवृद्धि के बीई लक्ष्य योजनित ड्रिलिंग, वर्क ओवर तथा अन्य मूल्यांकन प्रयासों से संभव योगदान के वैज्ञानिक मूल्यांकन पर आधारित थे, जबकि उत्पादन के एमओयू लक्ष्य को समान्य तौर पर उत्पादन क्षेत्रों से कोर रेवेन्यू अर्जन के लिए सीमित वृद्धि परिप्रेक्ष्य से एक द्विपक्षीय वार्तालाप के तहत सरकार द्वारा नियुक्त कार्य दल द्वारा बातचीत के दौरान उच्च स्तर पर तय किया गया था। परिणामस्वरूप, अभिवृद्धि आंकडो को 1(एक) से ऊपर आरआरआर रखने के लिए बढ़ाया गया था। इस प्रकार, बीई एमओयू लक्ष्य से कम हो गया। ओआईएल ने आगे कहा कि यद्यपि राजस्थान में सभी वर्षों में अन्वेषणात्मक ड्रिलिंग की गई थी तथापि, रिजर्व अभिवृद्धि को केवल वर्ष 2012-13 तथा 2013-14 में स्थापित किया गया। अन्य एनईएलपी ब्लॉको में खराब हाइड्रोकार्बन परिप्रेक्षय के कारण अन्य वर्षों में कोई रिजर्व अभिवृद्धि नहीं थी। यह भी कहा गया (मई 2015) कि उन्होंने अपने लक्ष्य का निर्धारण करते समय एमओयू तथा सर्वेक्षण तथा ड्रिलिंग से संबंधित योजना आयोग के लक्ष्य के बीच कोई तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया था।

उत्तर संतोषजनक नहीं है क्योंकि ओआईएल ने स्वयं स्वीकार किया है कि राजस्थान में रिजर्व अभिवृद्धि नए क्षेत्रों में अन्वेषणात्मक ड्रिलिंग के माध्यम से नहीं अपितु विकासक ड्रिलिंग पर आधारित भूविज्ञानी तथा इंजीनियरिंग समीक्षाओं के कारण थी।

पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस पर स्थायी समिति (2010-11, 15वीं लोक सभा) ने अनुदानो के लिए मांग पर अपनी आठवीं रिपोर्ट में चर्चा की (अगस्त 2011) कि तेल पीएसयू के लिए निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों को सभी संबंधित कारको पर ध्यान देकर विशेषज्ञों वाले कार्य दल, मंत्रालयों के प्रतिनिधियों तथा तेल कम्पनियों द्वारा अंतिम रूप दिया जाता है। लक्ष्यों को अंतिम रूप देने के पश्चात, तेल पीएसयू तथा मंत्रालय के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाते है। हालांकि, इन लक्ष्यों जिन्हें व्यवहार के साथ बहुत समझौता करके निर्धारित किया जाता है, का कम्पनियों द्वारा अनुपालन नहीं किया जाता तथा पिछले तीन वर्षों के दौरान निर्धारित अधिकतर लक्ष्य उन कारणों की वजह से प्राप्त नहीं किए गए जो प्राय: पुनरावृत्तीय प्रकृति के है। समिति का मत था कि एमओयू पर हस्ताक्षर करके, इन लक्ष्यों का अनुपालन करने के लिए कम्पनी की ओर से प्रतिबद्धता बन जाती है। किसी भी कम उपलब्धि को मंत्रालय द्वारा गंभीर रूप से समीक्षा किए जाने तथा कमी से बचने के लिए आवधिक रूप से उपयुक्त सुधारात्मक कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता थी।

3.3 रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात में कमी

रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात (आरआरआर)[16] अभिवृद्धित नए रिजर्वों तथा उत्पादित तेल के बीच सम्बंध का पता लगाता है जो यह दर्शाता है कि एक तेल कम्पनी अपने उत्पादन का प्रतिस्थापन कितनी अच्छी तरह से करती है। ईएवंपी क्षेत्र में दीर्घावधि स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए, ओआईएल को अपने उन रिजर्वों जिससे वे तेल तथा गैस उत्पादित करते है, को फिर से भरना अनिवार्य है।

असम एवं असम-अरकन के ओआईएल के मुख्य उत्पादन क्षेत्रो के वर्ष 2013-14 को समाप्त पिछले पांच वर्षों के कच्चे तेल तथा प्राकृतिक गैस के उत्पादन, अल्टीमेट रिजर्व (यूआर) तथा आरआरआर को तालिका 3.3 तथा चित्र 3.4 और 3.5 में दिया गया है तथा राजस्थान के संदर्भ में इसे तालिका 3.4 में दिया गया है:

[16] आरआरआर-एक वर्ष के दौरान अभिवृद्धित अंतिम रिजर्व/वर्ष के दौरान हाइड्रोकार्बन का कुल उत्पादन

तालिका 3.3 – असम एवं असम-अकरम में रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात का उपयोग

(मात्रा एमएमटॉय में)

क्रम सं.	विवरण	वर्ष				
		2009-10	**2010-11**	**2011-12**	**2012-13**	**2013-14**
1	प्रारंभिक हाइड्रोकार्बन	1054.25	1055.43	1072.70	1088.09	1097.16
2	अन्तिम रिजर्व अभिवृद्धि	10.06	8.43	8.41	8.20	7.31[17]
3	तेल उत्पादन	3.54	3.56	3.82	3.64	3.44
4	गैस उत्पादन	1.94	1.93	2.12	2.16	2.15
5.	**कुल उत्पादन (क्रम सं. 3+4)**	5.48	5.49	5.94	5.80	5.59
आरआरआर(क्रम सं. 2/क्रम सं. 5)		1.84	1.54	1.42	1.41	1.31

चित्र 3.4 – **असम तथा असम-अरकन में अंतिम रिजर्व अभिवृद्धि तथा कुल उत्पादन**

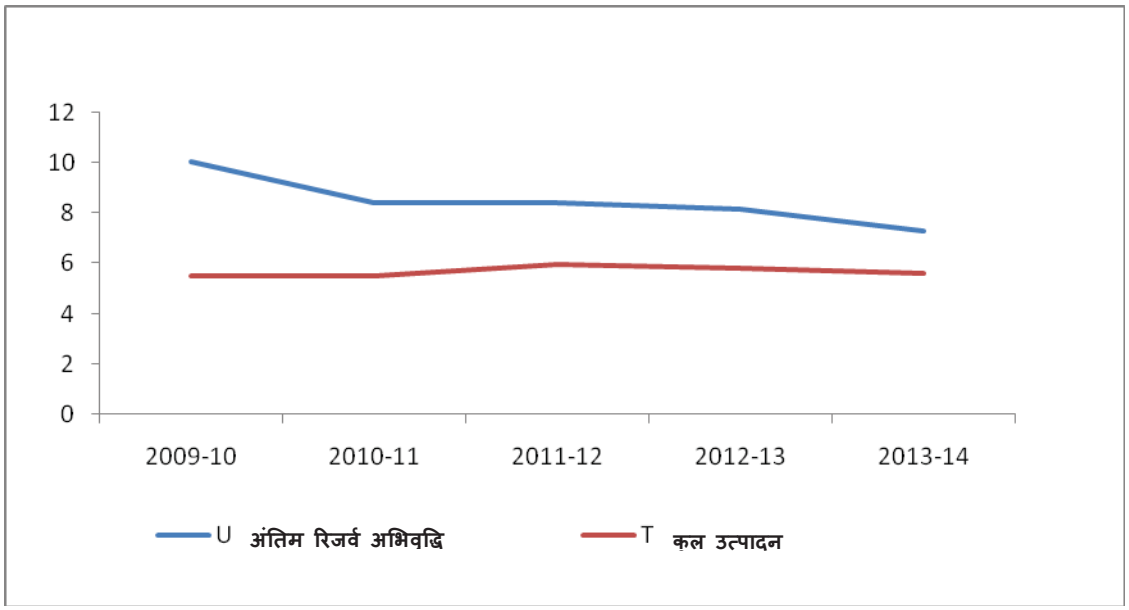

[17] संयुक्त उद्यम ब्लॉको से रिजर्व अभिवृद्धि को छोड़कर

चित्र 3.5 – असम तथा असम-अरकन में रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात

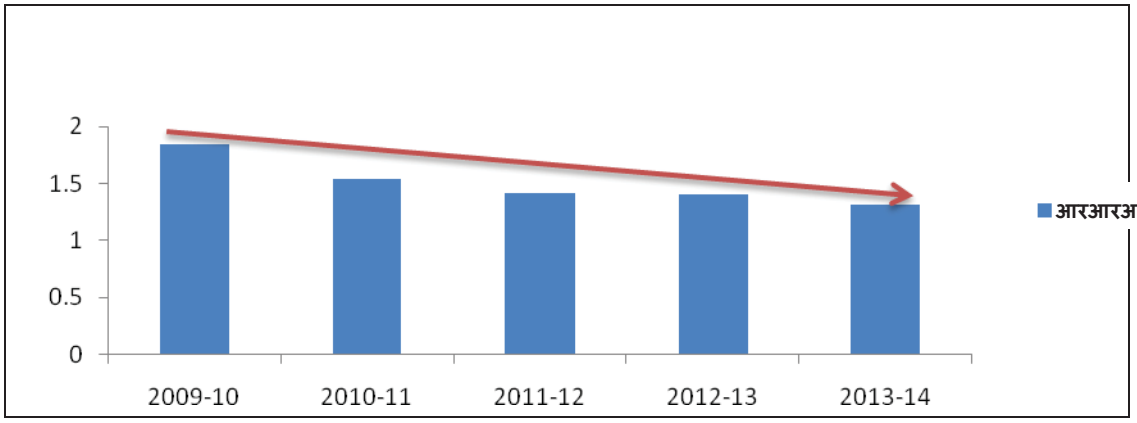

व्याख्या: यद्यपि कुल उत्पादन पॉच वर्षो मं एक समान रहा है तथापि, पांच वर्षों की अवधि में रिजर्व प्रतिस्थापन एवं अंतिम रिजर्व अभिवृद्धि लगातार नीचे जा रहा है।

तालिका 3.4 – राजस्थान में रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात की संगणना

(मात्रा एमएमटॉय में)

क्रम सं.	**विवरण**	**2009-10**	**2010-11**	**2011-12**	**2012-13**	**2013-14**
1	प्रारंम्भ में गैस	3.739	3.739	3.739	4.355	4.371
2	आर्थिक रूप से अंतिम वसूली योग्य गैस रिजर्व	2.771	2.771	2.771	3.235	3.243
3	**ईयूआर में अभिवृद्धि**	0.000	0.000	0.000	0.464	0.007
4	**गैस उत्पादन**	0.079	0.061	0.086	0.075	0.076
	आरआरआर (क्रम सं. 3/क्रम सं. 4)	0.000	0.000	0.000	6.187	0.092

लेखापरीक्षा ने अवलोकन किया कि:

- यद्यपि ओआईएल ने 2009-10 से 2013-14 के दौरान असम एवं असम-अरकन में निर्धारित रूप में 1 से अधिक आरआरआर प्राप्त किया, तथापि यूआर ने गिरावट की प्रवृति दर्ज की। फलस्वरूप, आरआरआर में 2009-10 में 1.84 से 2013-14 में 1.31 तक की कमी प्रवृति है।
- राजस्थान परियोजना ने केवल 2012-13 में 1 से अधिक आरआरआर दर्ज किया। राजस्थान में 2012-13 में आसामान्य रूप से अधिक आरआरआर के लिए कारण 2011-12 तक रिजर्व अभिवृद्धि का अभाव पाया गया। हालांकि, 2012-13 में रिजर्व अभिवृद्धि मुख्य रूप से भूविज्ञानी तथा इंजीनियरिंग समीक्षा के कारण थी।
- एमओपीएनजी ओआईएल के एमओयू लक्ष्यों का निर्धारण करने में नियंत्रण का प्रयोग करता है तथा वर्ष के दौरान तथा अन्त में निष्पादन मूल्यांकन करता है।

विभिन्न पैरामीटरों जिसके लिए वेटेज दी जाती है जबकि अन्वेषण ओआईएल का मूल कार्य है, में से 'वसूली योग्य रिजर्वो की अभिवृद्धि' को दी गई वेटेज 2009-10 में आठ प्रतिशत से 2013-14 में पांच प्रतिशत तक कम हुई। इसका तात्पर्य है कि ओआईएल का अपने मूल कार्य के अलावा वित्तीय तथा गैर वित्तीय पैटामीटरों पर अधिक मूल्यांकन हो रहा था।

ओआईएल ने अपने राजस्थान परिचालनों के संबंध में लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते हुए कहा (अप्रैल 2015) कि ऊपरी असम में ब्लॉको का विस्तृत रूप से अन्वेषण किया जा रहा था तथा वर्षों में महत्वपूर्ण खोजे हुई थी। हालांकि , पिछले कुछ वर्षों से की गई खोजे काफी चुनौतियो को दिखाते हुए तुलनात्मक रूप से कम थी। इन खोजो की पहचान तथा ड्रिलिंग करना तकनीकी तथा आर्थिक दोनो रूप से चुनौतीपूर्ण था। जैसाकि इन खोजो से अभिवृद्धित रिजर्वों ने ऊपरी असम पेट्रोलियम युक्त बेसिन मे पहले ही किए जा चुके अन्वेषण की श्रेणी को ध्यान में रखते हुए कमी प्रवृति दर्शाई।

यह उत्तर ज्ञात तथ्यों तथा चुनौतियो की पुनरावृति है। ओआईएल को वर्षों में अर्जित अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके इन समस्याओं का समाधान ढूंढने तथा रिजर्व अभिवृद्धि प्रवृतियों को बढाने के लिए एक सुरक्षात्मक नीति बनाने की आवश्यकता है।

3.4 पिअर्स के बीच हाइड्रोकार्बन खोजो में ओआईएल की सफलता

नामांकित ब्लॉक

ओआईएल ने चार खोजो[18] जिनका अभी मुद्रीकरण करना था, को शामिल करते हुए 2009-10 से 2013-14 के दौरान नामांकित क्षेत्र के तहत असम एवं असम-अरकन में 33 हाईड्रोकार्बन खोजे की। मुद्रीकरण के लिए लम्बित चार खोजों में से तीन खोजे क्षेत्रीय विकास के लिए वर्तमान रूप से तकनीकी-आर्थिक रूप में अरूचिकर थी तथा एक खोज प्रोत्साहन की प्रतीक्षा में है।

लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते हुए, ओआईएल ने कहा (अप्रैल 2015) कि मधकली - 1 कुएं के संदर्भ में, ओआईएल के पास इन-हाउस विशेषज्ञता तथा तकनीक नहीं थी तथा इसे बाहर से लिया गया था। इसी प्रकार, इसके पास दीरॉय -5 से अधिक तेल उत्पादित करने के लिए पर्याप्त तकनीक नहीं थी। इसके अलावा, दीसॉयजन ने पहले ही वर्कओवर

[18] मधकली-1, दीरॉय-5, दीसॉयजन-1 तथा महाकली-1

के लिए व्यवस्था की थी तथा 2015-16 के पूर्व भाग में परिणाम अपेक्षित थे। एमओपीएनजी ने कहा (जुलाई 2015) कि तकनीकी का अधिष्ठापन करके कुछ उत्पादन को मधकली -1 से अप्रैल 2015 में स्थापित किया गया। इसके अलावा, मधकली से उत्पादन कम क्षमता तथा अलग-थलग क्षेत्र के कारण विलम्बित था जिसे 2015-16 में पूरा होने के लिए वर्कओवर हेतु व्यवस्थित किया गया था।

इस संदर्भ में, ओआईएल का तर्क कि इसमें अधिक तेल उत्पादन करने के लिए विशेषज्ञता का अभाव था, तर्कसंगत नहीं है क्योंकि एक प्रतिकूल एनओसी होने के नाते, इसे ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए नई तकनीक के प्रति सचेत होना है।

एनईएलपी ब्लॉक

पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस स्थाई समिति (2014-15, 16वीं लोकसभा) ने अपनी पहली रिपोर्ट में वर्णित किया कि एनईएलपी के तहत, अन्वेषण ब्लॉको को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया जहां एनओसी अर्थात ओएनजीसी और ओआईएल भी समान स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे है, के माध्यम से भारतीय निजी तथा विदेशी कम्पनियों को दिया गया था।

एनईएलपी क्षेत्र (चरण I से IX) के दौरान दिए गए 254 ब्लॉको[19] में से परिचालको के रूप में निजी/विदेशी कम्पनियों द्वारा 66 खोजे की गई है तथा 64 खोजे एनओसी तथा राज्य पीएसयू (जीएसपीसीएल) द्वारा की गई है। हालांकि, ओआईएल ने सभी एनईएलपी चरणों में दिए गए एनईएलपी ब्लॉको से केवल एक खोज (ब्लॉक आरजे-ओएनएन-2004/2) की।

लेखापरीक्षा ने अपने पीअर्स के बीच हाईड्रोकार्बन खोजो में ओआईएल की सफलता की तुलना करने का प्रयास किया जिसे तालिका 3.5 तथा चित्र 3.6 में दर्शाया गया है:

[19] विभिन्न कम्पनियों को दिए गए 254 ब्लॉको में से 198 ब्लॉक उन कम्पनियों से संबंधित है जिन्होंने खोजे की है।

तालिका 3.5-एनईएलपी के तहत हाईड्रोकार्बन खोजे

(31.03.2014 तक)

क्र. सं.	कम्पनी (परिचालक)	आवंटित ब्लॉक	तेल खोज	गैस खोज	कुल खोज
1	ओएनजीसी	111	10	29	39
2	ऑयल इंडिया लिमिटेड	19	1	-	1
3	गुजरात स्टेट पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.	8	15	9	24
4	रिलॉयस इंडस्ट्रीज लि.	38	14	37	51
5	जुबिलेंट ऑयल एंड गैस प्रा.लि.	6	2	4	6
6	फोकस एनर्जी लि.	3	-	1	1
7	कैरन इंडिया लि.	8	4	1	5
8	नीको रिसोर्सिज लि.	2	-	2	2
9	नफ्तोगज	3	1	-	1
	कुल	**198**	**47**	**83**	**130**

स्रोत: डीजीएच रिपोर्ट

चित्र 3.6 – एनईएलपी के तहत हाईड्रोकार्बन खोजे

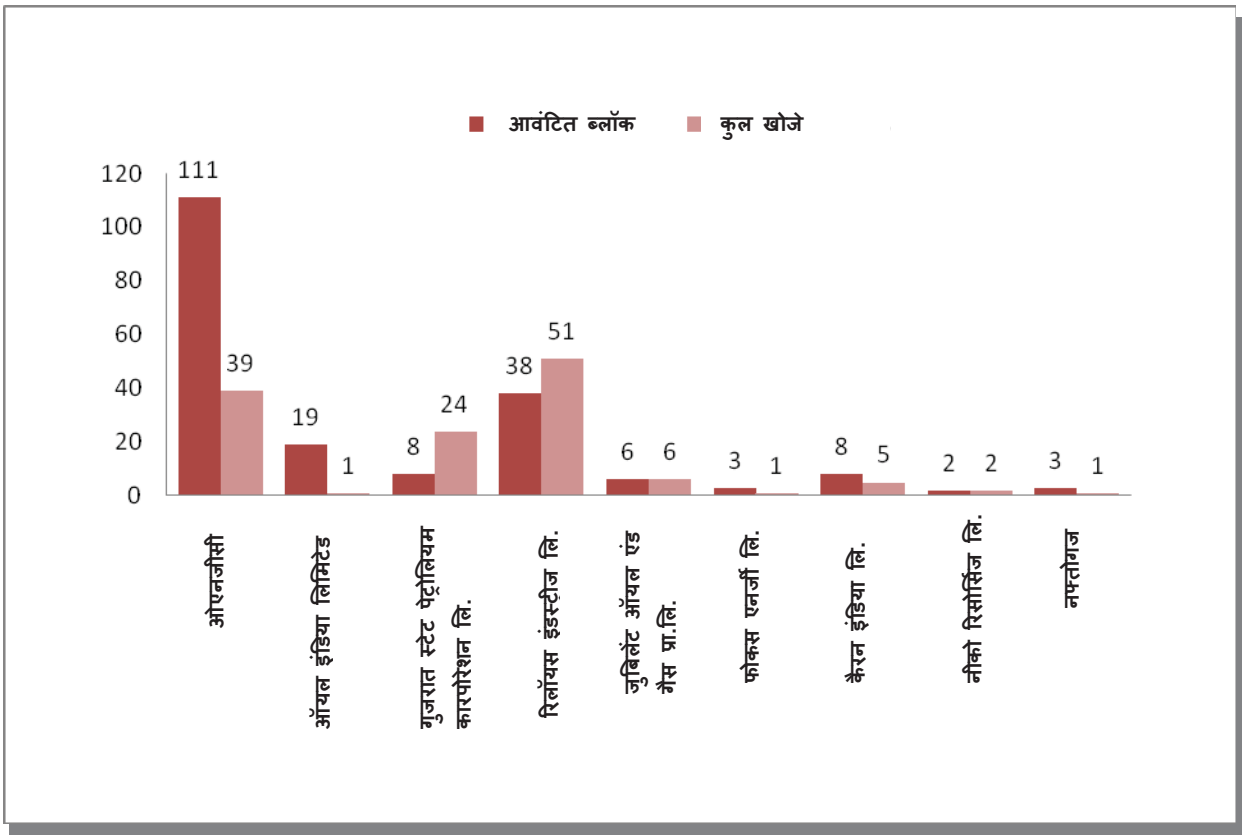

लेखापरीक्षा ने अवलोकन किया कि ई एवं पी क्षेत्र में वित्तीय स्रोत तथा तकनीकी अनुभव दोनो रखने वाली एक एनओसी होने के बावजूद, ओआईएल का निष्पादन उद्योग में अपने

पीअर्स से पीछे रह गया। एनईएलपी अवधि के दौरान कुल खोजो में से ओआईएल ने राजस्थान में पूनम कुएं में केवल एक खोज की जिसका अभी मुद्रीकरण होना है (अप्रैल 2015) हालांकि, खोज जुलाई 2012 में हो गई थी।

ओआईएल ने डीजीएच को सूचित किया (दिसम्बर 2012) कि उसके पास पूनम-1 से अधिक तेल उत्पादन करने के लिए पर्याप्त तकनीक नहीं है। खोज क्षमतात्मक वाणिज्यिक हित तथा विशेषता मूल्यांकन की थी। हालांकि, ओआईएल ने किसी मूल्य निर्धारण कुएं की ड्रिलिंग के बिना डीजीएच को वाणिज्यिकता (डीओसी) की प्रमाणिकता प्रस्तुत की। डीओसी को अभी डीजीएच द्वारा स्वीकृत होना था (दिसम्बर 2014), जिसके परिणामस्वरूप खोज के मुद्रीकरण में विलम्ब हुआ।

ओआईएल ने कहा (अप्रैल 2015) कि 40 ब्लॉको मे से ओआईएल 19 ब्लॉको में परिचालक था। इन 19 ब्लॉको में से 3 ब्लॉको को रसद, एमओडी स्वीकृति आदि जो ओआईएल के नियंत्रण से परे थी, के कारण जांच सम्बंधी अन्वेषण ड्रिलिंग के बिना छोड़ दिया गया। शेष 16 ब्लॉको में से 8 ब्लॉको की अन्वेषण ड्रिलिंग द्वारा जांच की गई तथा 2013-14 तक केवल 1 खोज की गई थी। शेष ब्लॉको में अन्वेषण कार्य चल रहे थे तथा उनकी अभी जांच नहीं हुई थी।

तथ्य यह है कि ओआईएल ने अभी तक केवल दो खोजे की थी। पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस स्थाई समिति (2012-13, 15वीं लोकसभा) ने सिफारिश की कि देश हाइड्रोकार्बन आवश्यकता को पूरा करने में सफलता प्राप्त करने के लिए एनओसी पर विचार करती है। अत: एनओसी को अधिक प्रतिबद्धता दिखानी चाहिए तथा सराहनीय परिणाम प्राप्त करने चाहिए और उन पर की गई अपेक्षाओं को पूरा करना चाहिए। समिति ने सिफारिश की कि एमओपीएनजी/डीजीएच को विभिन्न कार्यो की समय पर प्राप्ति की जांच करने के लिए विभिन्न अन्वेषण ब्लॉको में प्रगति को मॉनीटर करना चाहिए।

एग्जिट कॉन्फ्रेंस में (जुलाई 2015) एमओपीएनजी ने कहा कि निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट में निहित लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां ओआईएल के अन्वेषण प्रयासो को मॉनीटर करने के लिए उनके तंत्र को मजबूत बनाने में उपयोगी होगी।